The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 6 | June 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

अग्नि पुराण में वर्णित आयुर्वेदः एक ऐतिहासिक परिदृश्य

शिवानी

शोध छात्रा, इतिहास विभाग, पंडित ललित मोहन शर्मा ऋषिकेश परिसर, श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय। ई0 मेल- shivanibisht922@gmail.com

प्रोफेसर संगीता मिश्रा

आचार्य, इतिहास विभाग, पंडित ललित मोहन शर्मा ऋषिकेश परिसर, श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय। ई0 मेल- sangeetamishra450@gmail.com

डॉ. राकेश मोहन नौटियाल

सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, रा-म-वि-कमान्द, टिहरी गढ़वाल, श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय। ई0 मेल- history.rakeshnautiyal@gmail.com

DOI : https://doi.org/

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 18-05-2026

Accepted: 22-06-2026

Published: 15-07-2026

Keywords:

अग्नि पुराण, आयुर्वेद, चिकित्सा पद्धति, आध्यात्मिक, मानसिक, प्राचीन।

ABSTRACT

भारत में आयुर्वेद के संगीता सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षों का उद्भव एवं विकास विभिन्न कालों में भिन्न-भिन्न स्तरों पर हुआ। प्राचीन काल में चरक, सुश्रुत और वाग्भट्ट आदि विद्वानों ने आयुर्वेद को और अधिक सशक्त बनाया था। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में आयुर्वेद के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। इन्हीं ग्रंथों में पुराण भी शामिल हैं, जिनकी संख्या अठारह हैं। इन्हीं अठारह पुराणों में से एक पुराण अग्नि पुराण है, जो कि मुख्य रूप से अग्नि देवता को समर्पित है, जिसमें लौकिक कथा-कहानियों के साथ-साथ आयुर्वेद के विषय में भी जानकारी प्राप्त होती है। आयुर्वेद के दृष्टिकोण से अग्नि पुराण इतना महत्वपूर्ण है, कि इसके अध्याय 279 से 300 तक हमें आयुर्वेद के विषय में ही जानकारी प्राप्त होती है। अग्निपुराण में केवल मानव से संबंधित रोगों का ही वर्णन नही है, अपितु इसमें पशुओं एवं वनस्पतियों से संबंधित रोगों,

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

उनके लक्षणों तथा उनके उपचारों का भी उल्लेख किया गया है। इस ग्रंथ के माध्यम से पौराणिक कालीन चिकित्सा पद्धति पर प्रकाश पड़ता है। अग्नि पुराण प्राचीन भारत के सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक पक्षों के साथ-साथ स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसके माध्यम से आयुर्वेदिक सिद्धान्तों पर प्रकाश पड़ता है। यह ग्रंथ स्पष्ट करता है, कि विभिन्न तत्व आपस में कैसे क्रिया करतें हैं और असंतुलन कैसे विभिन्न बिमारियों का कारण बन सकता है तथा कैसे आयुर्वेद इन बिमारियों के उपचार में सहायक सिद्ध हो सकता है। अग्नि पुराण में वर्णित आयुर्वेदिक शिक्षाओं का एकीकरण इसे अन्य प्राचीन भारतीय ग्रंथों से अलग करता है, जो तत्कालीन चिकित्सा पद्धतियों पर प्रकाश डालता है। वास्तव में इस पुराण में वर्णित आयुर्वेदिक चिकित्सकीय सिद्धान्तों के माध्यम से शारारिक, आध्यात्मिक व मानसिक स्वास्थ्य के विषय में जानकारी मिलती है। इस शोध पत्र में कुछ आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के साथ उनके वैज्ञानिक नाम भी दिए गए हैं।

प्रस्तावना- वेदों की भांति पुराण भी सनातन संस्कृति के मूल आधार हैं। जिनसे हमें धार्मिक व लौकिक विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। धार्मिक विषयों के तहत पुराणों में व्रत, तीर्थ, उत्सव, धार्मिक कथा-कहानियाँ तथा त्यौहार आदि का ज्ञान प्राप्त होता है, जबकि लौकिक विषयों के तहत समाज, राजनीति, इतिहास, परमाणु सिद्धान्त, आयुर्वेद, संगीत, अर्थव्यवस्था तथा शस्त्र-शास्त्र के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है। पुराणों की कुल संख्या अठारह है, इन्हीं अठारह पुराणों में से एक अग्नि पुराण है। जिसमें धनुर्वेद, रामायण, दशावतार, व्याकरण के सार के साथ-साथ आयुर्वेद का भी वर्णन है।

आयुर्वेद के दृष्टिकोण से अग्नि पुराण इतना महत्वपूर्ण है, कि इसके अध्याय 279 से 300 तक हमें आयुर्वेद के विषय में ही जानकारी प्राप्त होती है। अग्निपुराण में केवल मानव से संबंधित रोगों का ही वर्णन नही है, अपितु इसमें पशुओं एवं वनस्पतियों से संबंधित रोगों, उनके लक्षणों तथा उनके उपचारों का भी उल्लेख किया गया है। इनके अतिरिक्त इस ग्रंथ में विभिन्न प्रकार के विषों का उपचार तथा मंत्र औषधियों का भी वर्णन किया गया है। आयुर्वेद में अग्नि को पाचन प्रक्रिया और चयापचय के पीछे की मूलभूत शक्ति माना जाता है। इसे पाचन अग्नि के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो कि भोजन को ऊर्जा में परिवर्तित

करती है और जिससे सम्पूर्ण स्वास्थ्य और जीवन शक्ति प्रभावित होती है। आयुर्वेद चिकित्सा की एक प्राचीन प्रणाली है, जिसकी जड़ें हिंदू संस्कृति की परंपराओं और दर्शन से गहराई से जुड़ी है।

अग्नि पुराण में वर्णित विभिन्न मानव बिमारियां एवं उनका उपचार

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इस शोध पत्र में अग्नि पुराण में वर्णित विभिन्न रोगों को अलग-अलग भागों में विभाजित किया गया है-

1. ज्वर- अग्नि पुराण में बताया गया है, कि ज्वरक्रान्त व्यक्ति को लबंन अर्थात् निराहार व्रत कराना चाहिए। उसके बाद उसको सोंठ (Zingiber officinal) से युक्त लाल माण्ड (धान के लावे का माण्ड) तथा नागरमोथा पित्तपापड़ा, खस (Vetiveria Zizanioides) लालचन्दन सुगन्धवाला और सौंठ के साथ अर्धपक्व जल को प्यास और ज्वर की शांति के लिए देना चाहिए। रोगी को आवश्यकता पड़ने पर ज्वर निकालने के लिए स्नेहन अर्थात् पसीना कराना चाहिए। जिससे रोगी का रोग शान्त हो जाए। साठी, तिन्नी, लाल अगहनों और प्रभोदक (धान्यविशेष) तथा ऐसे ही अन्य धान्यों के भी पुराने चांवल, यव से बने पदार्थ ज्वर में हितकर होते हैं। ज्वरक्रान्त व्यक्ति को मूंग, मसूर, चना, कुल्थी, सोंठ, अरहर, खंखसा, कायफर, श्रेष्ठतम, फल सहित परमल, नीम की छाल, पित्तपापड़ा और अनार खिलाना चाहिए। नीम का प्रयोग उसके औषधिय गुणों के कारण वर्तमान समय में भी विभिन्न रोगों के उपचार हेतु किया जाता है।

रक्षन्बलं हि ज्वरितं लङ्घितं योजयेद्भिषक्।
सविश्वं लाजमण्डं तु तृड्ज्वरान्तं शृतं जलम्।।
मुस्तपर्पटकोशीरचन्दनोदीच्यनागरैः।
षडहे च व्यतिक्रान्ते तिक्तकं पापयेद्धुरवम्।।
स्नेहयेत्यक्तदोषं तु ततस्तं च विरेचयेत्।
जीर्णाः षष्टिकनीवाररक्तशालिप्रमोदकाः।।
तद्विधस्ते ज्वरेष्विष्टा यवानां विकृतिस्तथा।
मुद्गा मसूराश्चणकाः कुलत्थाश्च सकुष्ठकाः।।
आढक्यो लावकाद्याश्च कर्कोटककटोलकम्।
पटोलं सुफलं निम्बं पर्पटं दाडिमं ज्वरे।।[1]

अग्नि पुराण के 283 वें अध्याय के दूसरे श्लोक में कहा गया है, कि पीपल और अतीस सहित काकड़ा श्रृंगी का अथवा केवल अतीस का चूर्ण करके व्यक्ति को शहद के साथ खिलाने से खाँसी, वमन और ज्वर

समाप्त हो जाता है। भारत में आज भी ग्रहणियां शहद को हल्दी में मिलाकर उसका प्रयोग जुखाम आदि रोगों को ठीक करने के लिए करती हैं।

शृंगी सकृष्णातिविषां चूर्णितां मधुना लिहेत्।
एका चातिविषा काशश्छर्दिज्वरहरी शिशोः।।[2]

इसी प्रकार अध्याय 285 के 14 वें श्लोक में बताया गया है, कि गिलोय, अडूसा, लोध और पीपल का चूर्ण शहद के साथ ग्रहण करने से कफयुक्त रक्त, खाँसी तथा ज्वर नष्ट होता है।

गुडूची वासकं लोध्रं पिप्पलीक्षौद्रसंयुक्तम्।
कफान्वितं जयेद्रक्तं तृष्णाकासज्वरापहम्।।[3]

2. रक्तपित्त- रक्तपित्त के संबंध में अग्निपुराण में उल्लेखित है, कि इसमें बिना सोंठ के षडंग (खस, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, चन्दन एवं सुन्धवाला) से बना क्वाथ देना चाहिए। रक्तपित्त रोग में जौ से बने विभिन्न पदार्थ, धान का लावा, गेहूँ का आटा, मूँग, मोंठ, मसूर, चना और अगहनी धान का चांवल आदि रोगी के लिए हितकारक हैं। इनके अतिरिक्त घी एवं दूध से बने गेहूँ के पदार्थ-दलिया, हलुवा आदि भी रोगी के लिए लाभदायक है।

अधोगे वमनं शस्तमूर्ध्वगे च विरेचनम्।
रक्तपित्ते तथा पानं षडगंशुण्ठिवर्जितम्।।
सक्तुगोधूमलाजाश्च यवशालिमसूरकाः।
सकुष्ठचणका मुद्गा भक्ष्या गोधूमका हिताः।।
साधिता घृतदुग्धाभ्यां क्षौद्रं वृषरसो मधु।
अतीसारे पुराणानां शालीनां भक्षणं हितम्।।[4]

3. चर्म रोग- अग्नि पुराण में विभिन्न प्रकार के चर्म-रोगों जैसे-कुष्ठ रोग, झुर्रियां, फोड़ा-फुन्सी आदि के विषय में विस्तारपूर्वक बताया गया है। कुष्ठ रोग के संबंध में अग्नि पुराण में निम्न श्लोक हैं-

गोधूमशालयो मुद्गा ब्रह्मर्क्षखदिरोऽभया।
पंचकोलं जागंलाश्च निम्बधात्र्यः पटोलकाः।।
मातुलुगंरसाजाजिशुष्कमूलकसैन्धवाः।
कुष्ठिनां च तथा शस्तं पानार्थे खदिरोदकम्।।
मसूरमुद्गौ सूपार्थे भोज्या जीर्णाश्च शालयः।
निम्बपर्पटकौ शाकौ जागंलानां तथा रसः।।[5]

उपरोक्त श्लोकों में विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों का उल्लेख है, जिनमें गेहूँ, चांवल, मूँग, पलाशबीज, खैर (Acacia catechu), हर्रे, पंचकोल (पिप्पली, पीपलामूल, चाभ, चित्ता, सोंठ), जांगल-रस, नीम का पच्चांग (फूल, फल, मूल, पत्ती व छाल), आँवला, परवल, बिजौरा (Citrus medica), नींबू का रस (Citrus limon), जीरा (Cuminum Cyminum), सूखी मूली व सेंधा नमक रोगियों के लिए लाभदायक बताए गए हैं। इनके अतिरिक्त पीने के लिए खदिरोदक (खैर मिलाकर तैयार किया गया जल) प्रशस्त माना गया है। पेया बनाने के लिए मसूर एवं मूंग का प्रयोग होना चाहिए। कुष्ठ रोगियों के लिए पुराने चांवल लाभदायक हैं। नीम व पीत्तपापड़ा का शाक और जांगल रस ये सब कुष्ठ रोग के नाशक हैं।

अनिपुराण के अध्याय 283 के 13वें श्लोक में वर्णित है, कि वाकुची को तिलों के साथ एक वर्ष तक खाने से कुष्ठरोग समाप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त हरैं भिलावा, तेल, गुड़ और पिण्डखजूर ये कुष्ठनाशक औषधियां हैं।[6]

चर्म रोगों के संबंध में अग्निपुराण में वर्णित है, कि आक, काटा, करज्ज ¼Pongamia pinnata½, थूहर, अमलतास और चमेली के पत्तों को गोमूत्र के साथ पीसकर उसका उबटन लगाने से त्वचा संबंधी बिमारियां ठीक होती हैं।

पल्लवैरर्कपूतीकस्नुहीरूग्घातजातिकैः।

उद्वर्तयेत्सगोमूत्रैः सर्वत्वग्दोषनाशनः।।[7]

कुष्ठरोग के अतिरिक्त त्वचा संबंधी अन्य रोगों जैसे- चकत्ते, फोड़ा-फुन्सी आदि रोगो तथा उनके उपचार का भी अग्निपुराण में उल्लेख है। इसमें वर्णित है, कि त्रिफला, नील कमल, मुलहठी, सैंधा-नमक, आर्कव (कुकुरमाँगरा), लोहचूर्ण और काली मिर्च सहित पकाये हुए तैल के मर्दन से वमन की शान्ति होती है। इसके अतिरिक्त दुग्ध, मार्कव-रस, मुलहठी और नीलकमल को दो सेर लेकर तब तक पकाना चाहिए, जब तक एक पाव तैल शेष न रह जाए। यह तैल वृद्धावस्था के चिह्नों, पके बालों का नाशक है। नीम की छाल, परवल की पत्ती, गिलोय, खैर की छाल, अडूसा अथवा चिरायता, पाठा त्रिफला और लाल चन्दन ये ज्वर को नष्ट करते हैं एवं कुष्ठ रोग, फोड़ा-फुन्सी, चकत्ते आदि को भी मिटा देते हैं। परवल की पत्ती, गिलोय, चिरायता, अडूसा, मजीठ एवं पित्तपापड़ा- इनके क्वाथ में खदिर मिलाकर लिया जाए तो वह ज्वर तथा विस्फोटक रोगों को शान्त करता है।[8]

4. नेत्र रोग- अग्नि पुराण में नेत्रों से संबंधित रोगों तथा उनके उपचार का भी वर्णन है। इस पुराण में वर्णित है, कि नेत्रों से संबंधित रोगों के लिए व्योष (सोंठ, काली मिर्च, पीपल) और त्रिफला (आँवला, हर्रा, बहेड़ा) से मिश्रित जल आंखों के लिए लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त रसाजन (रसोत) भी आंखों से संबंधित रोगों को समाप्त करता है। साथ ही लोध, काँजी और सेंधा नमक को घी में भूनकर शिला पर पीसकर तैयार लेप को आखों पर लगाने से सभी तरह के नेत्र रोग ठीक होते हैं। इनके प्रयोग से नेत्रों में लगातार आँसू गिरना बन्द हो जाता है। गिरिमृत्तिका और सफेद चन्दन का

नेत्रों पर बाहरी लेप करना नेत्रों के लिए हितकारी है। नेत्र रोगों के समाप्ति हेतु त्रिफला का सदा सेवन करना चाहिए और उसके जल से नेत्रों को धोना चाहिए।[9]

इसी प्रकार अग्नि पुराण में उल्लेखित है, कि यदि शुद्ध राँगे को त्रिफला, भृंगराज, अदरख के रस, मधु, घृत तथा गोमुत्र से अज्जंन किया जाए तो वह नेत्र रोगों के लिए हितकर होता है।[10] अग्नि पुराण में कुछ मंत्रो का भी उल्लेख हैं, जो विभिन्न रोगों का नाशक है, इन्हीं मंत्रो में एक पुष्कराक्ष नामक मंत्र है जो नेत्र रोगों का निवारण करता है।[11]

5. **विभिन्न प्रकार के विष-** अग्नि पुराण में सांप, मकड़ी, कीटों और बिच्छू आदि के विष के लक्षण तथा उनके उपचार का भी वर्णन मिलता है। इस पुराण में उल्लेखित है, कि नीम के पत्तों का सेवन सांप के विष की दवा है। बिच्छू के विष के संबंध में कहा गया है, कि इसके लिए मोरपंख और घृत का धूप लाभदायक है। साथ ही आंक के दूध से पीसे हुए पलाशबीज के लेप से भी बिच्छू का जहर उतर जाता है। बिच्छू के काटे हुए व्यक्ति को यदि पीपल या बड़ी हरड, जायफल पिलाए तो वह रोगी के लिए लाभकारी होता है। अग्नि पुराण में वर्णित है, कि आंक का दूध, तिल, तैल, पलल, और गुड़ इनको समान मात्रा में लेकर पिलाने से कुत्ते का विष शीघ्र ही दूर हो जाता है। घी के साथ समान मात्रा में चौराई का मूल और निशोथ पीने से मनुष्य को सर्प-विष और कीटों के विषों से मुक्ती मिलती है। श्वेत चन्दन, पद्‌माख कूठ, लताम्बु (जूही का पानी), उशीर (खस), पाटला, निर्गुण्डी, शाटिया, सेलु (सेरूकी) ये मकड़ी के विष का नाश करने वाली औषधि है।[12]

6. **वात, पित्त, कफ (त्रिदोष सिद्धान्त)-** अग्नि पुराण अग्नि एवं त्रिदोषों- वात, पित्त तथा कफ के बीच संबंधों के विषय में जानकारी देता है, जो मनुष्य के शरीर में मनोवैज्ञानिक एवं शारारिक कार्यों को नियत्रिंत करते हैं। वात का संबंध वायु से होता है, जो मानव शरीर के गति तथा तंत्रिका तंत्र को संतुलित करता है। पित्त का संबंध अग्नि तत्व से होता है, जो मानव शरीर में पाचन और चयपाचय की प्रक्रियाओं के लिए उत्तरदायी होता है। इसी प्रकार से कफ का संबंध पानी से है, जो शरीर में संरचना तथा स्थिरता को संतुंलित करता है। अग्नि पुराण के अध्याय 280 के श्लोक 17-21 में वात, पित्त और कफ के लक्षण व निदान का वर्णन किया गया है। इस पुराण में वात, पित्त, कफ के लक्षण बताते हुए कहा गया है कि, वात रूक्ष, शीत व चल है। पित्त उष्ण है तथा कटुत्रय (सोंठ, मिर्च, पीपली) पितकर है। कफ स्थिर तथा मधुर है। समान वस्तुओं के प्रयोग से इनकी वृद्धि तथा असमान वस्तुओं के प्रयोग से हानि होती है। मधुर अम्ल एवं लवण रस कफकारक तथा वायु की वृद्धि करते हैं। कटु, तिक्त व कषाय रस वायु की वृद्धि करते हैं तथा कफनाशक हैं। इसी प्रकार कटु अम्ल, लवण रस पित्त बढाने वाले हैं। तिक्त स्वादु (मधुर) तथा कषाय रस पित्तनाशक होते हैं। यह गुण या प्रभाव रस का नही है, उसके विपाक का माना गया है। उष्णवीर्य कफनाशक तथा शीतवीर्य पित्तनाशक होते हैं।[13] अग्निपुराण में शिशिर, वसन्त तथा शरद ऋतु में क्रमशः कफ के चय, प्रकोप व प्रशमन बताये गये हैं अर्थात् कफ का चय शिशिर ऋतु में, प्रकोप वसन्त ऋतु में और प्रशमन ग्रीष्म ऋतु में होता है। वात का संचय ग्रीष्म में, प्रकोप वर्षा तथा रात्रि में और शमन शरद् ऋतु मे बताया गया है।[14] अग्नि पुराण में उल्लेखित है, कि जैसे-जैसे रातें घटती हैं, वैसे-वैसे मनुष्य का बल

भी क्रमशः घटता है। रात में दिन में तथा भोजन के बाद आयु के आदि, मध्य और अवसान काल में कफ, पित्त तथा वात प्रकुपित होते हैं। प्रकोप के आदि काल में इनका संचय होता है तथा प्रकोप के बाद इनका शमन कहा गया है। अधिक भोजन व अधिक निराहार व्रत से तथा मल-मूत्र आदि के वेगों को रोकने से सभी रोग उत्पन्न होते हैं। इसलिए पेट के दो भाग को अन्न से व एक भाग को जल से पूरा करना चाहिए। शेष एक भाग को वायु आदि के संचरण के लिए रिक्त रखना चाहिए। नाभि के ऊपर पित्त का स्थान है तथा नीचे श्रोणी एवं गुदा को वात का स्थान बताया गया है।[15]

7. **पशु चिकित्सा-** अग्नि पुराण के विभिन्न अध्यायों में अश्व, गज और गाय आदि पशुओं की चिकित्सा के संबंध में विवरण मिलता है। यह ग्रंथ न केवल पशु चिकित्सा पर प्रकाश डालता है, अपितु पशुओं की देखभाल, रखरखाव आदि पर भी **प्रकाश** डालता है। अग्नि पुराण में अश्व, गौवंश आदि की चिकित्सा का भी विस्तार से वर्णन् किया गया है। अग्नि पुराण में अश्व चिकित्सा के संबंध में अलग-अलग अध्यायों में वर्णन मिलता है। अश्वों के विभिन्न रोगों के संबंध में अग्नि पुराण में वर्णन है, कि मधु के साथ अडूसा, नीम की छाल, बड़ी कटेरी और गिलोय इनकी पिण्डी तथा सिर का स्वेद- ये नासिका मल का विनाश करने वाला है। हींग, पीकरमूल, सोंठ, अम्लवेत, पीपल तथा सैन्धवलवण को गरम जल के साथ देने पर शूल का विनाश होता है। सोंठ, अतीस, मोथा, दूब तथा बेल इनका क्वाथ अश्व को पिलाया जाए तो वह उसके सभी प्रकार के अतीसार को नष्ट करता है। प्रियंग, कालीसार और पर्याप्त शर्करा से युक्त बकरी का गरम किया हुआ दूध पी लेने पर घोडे की थकावट दूर हो जाती है।[16]

अग्नि पुराण गौ वंश से संबंधित रोगों, उनके उपचार तथा गौओं की देखरेख के तरीकों का भी विवरण प्रदान करता है। अग्नि पुराण में वर्णित है, कि गौओं के शृंगरोगों में सोंठ, खरेटी और जटामांसी को सिलपर पीसकर उसमें मधु, सैन्धव और तैल मिलाकर प्रयोग करना चाहिए। इससे शृंगरोग ठीक होते हैं। सभी प्रकार के कर्णरोगों में मंजिष्ठा, हींग और सैन्धव डालकर तैयार किया हुआ तैल प्रयोग करना चाहिए या लहसुन में पकाया हुआ तैल प्रयोग करना चाहिए। दन्तशूल में बिल्व मूल, अपामार्ग, धान की पाटल और कुटज का लेप करना चाहिए। वह शूलनाशक है। दन्तशूल का हरण करने वाले द्रव्यों और कूट को घृत में पकाकर देने से मुख रोगों का निवारण होता है। जिह्व रोगों में सैन्धव लवण हितकारी है। गलग्रह रोग में सोंठ, हल्दी, दारूहल्दी और त्रिफला विहित है। वातरोग व क्षय आदि रोगों में गौओं को घृत मिश्रित त्रिफला का अनुपान प्रशस्त बतलाया गया है। अतिसार में हल्दी, दारूहल्दी और पाठा (नेमुक) देना चाहिए। सभी तरह के कोष्ठगत रोगों में शाखा (पैर-पुच्छादि) गति रोगों में एवं कास, श्वास व अन्य सामान्य रोगों में सोंठ भारंगी देना चाहिए। हड्डी आदि टूटने पर लवणयुक्त प्रियंगु का लेप करना चाहिए। तैल वातरोग का हरण करता है। पित्तरोग में तैल में पकायी हुई मुलहठी, कफ रोग में मधुसहित त्रिकटु (सोंठ, मिर्च और पीपल) हितकर है।[17]

उपसंहार- अंत में कहा जा सकता है, कि अग्नि पुराण न केवल आयुर्वेद के सिद्धान्तों और प्रथाओं का वर्णन करता है, बल्कि समकालीन स्वास्थ्य चर्चाओं में इसकी प्रमाणिकता और प्रासंगिकता को भी बढावा देता है। पिछले कुछ वर्षों में सम्पूर्ण विश्व ने विशेषकर पाश्चात्य देशों ने आयुर्वेद की ओर विशेष ध्यान केन्द्रित किया। इस दृष्टिकोण से अग्नि पुराण

में वर्णित आयुर्वेद का महत्व और भी बढ जाता है। आयुर्वेदिक उपचार में शल्य चिकित्सा व विषहरण आदि प्रथाओं सहित विभिन्न पद्धतियाँ शामिल हैं, जो रागियों के रोगों के उपचार हेतु महत्वपूर्ण है। अग्नि पुराण में वर्णित हरिद्र (हल्दी), आंवला, गिलोय एवं अदरख जैसी प्रसिद्ध जड़ी बूटीयों का उनके औषधीय गुणों के कारण आज भी व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। यह ग्रंथ आयुर्वेदिक साहित्य के संग्रह में एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें आयुर्वेदिक सिद्धान्तों व प्रथाओं के विषय में बहुमूल्य जानकारी है। यह स्वास्थ्य व रोगों के विभिन्न पहलुओं के लिए मागदर्शन प्रदान करता है। अग्नि पुराण में उल्लेखित आयुर्वेदिक सिद्धान्त स्वास्थ्य के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिसका मुख्य उद्देश्य शरीर और मन के भीतर सामंजस्यपूर्ण संतुलन स्थापित करता है।

सन्दर्भ:

[1]अग्नि पुराण 279/3-7.

[2] अग्नि पुराण 283/2.

[3] अग्नि पुराण 285/14.

[4] अग्नि पुराण 279/8-10.

[5] अग्नि पुराण 279/13-15.

[6] अग्नि पुराण 283/13.

[7] अग्नि पुराण 283/12.

[8] अग्नि पुराण 285/26-29.

[9] अग्नि पुराण 279/46-48.

[10] अग्नि पुराण283/6-7.

[11] अग्नि पुराण 284/09.

[12] अग्नि पुराण 279/57-61.

[13] अग्नि पुराण 280/17-21.

[14] अग्नि पुराण 280/22-24.

[15] अग्नि पुराण 280/29-34.

[16] अग्नि पुराण 289/11-14.

[17] अग्नि पुराण 292/23-31.